

## कारागारों में संगीत: एक सुधारात्मक प्रयास

ASHWINI SAGAR RAIKWAR<sup>1</sup> & DR. SUVARNA TAWSE<sup>2</sup>

<sup>1</sup>MJB Govt.Girls.P.G.Collage.Moti Tabela. Indore

<sup>2</sup>Supervisor/ - Ret.prof/H.O.D/Chairman,MJB Govt.Girls.P.G.Collage.Moti Tabela. Indore

### सार संक्षेपिका

माध्यम का उद्देश्य कारागारों में सजा काट रहे कैदियों की मनः स्थिति एवं उनके विचारों में आये परिवर्तन का विश्लेषण करना है जिसमें संगीत को एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। संगीत को लेकर कारागारों में क्या गतिविधियाँ संचालित होती हैं तथा उन गतिविधियों का बंदियों के मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ा। यह संगीत के प्रयोगों द्वारा जानने का प्रयास किया। मध्यप्रदेश के कारागारों में संगीत की क्या व्यवस्था है? तथा सुधारात्मक कार्यों तथा बंदी पुनर्वास में संगीत अपनी भूमिका किस प्रकार निभा सकता है। इस बात का अध्ययन करना और कैदी जब संगीत के परिवेश में होते हैं, तो उन्हें कैसा लगता है? अपराधियों से जुड़ी मानसिकता तथा मनोवैज्ञानिकता को भी इस अध्ययन के माध्यम से जाना गया। जब न्यायालय द्वारा किसी अपराध करने के कारण दण्ड प्रक्रिया संहिता के अनुसार दण्ड घोषित करके न्यायपालिका द्वारा ही एक निश्चित समय अवधि तक बंदीग्रह में उस व्यक्ति को जिस पर अपराध सिद्ध हुआ हो, को रोके जाने की प्रक्रिया को कारावास, कैद या जेल कहा जाता है। एक कैदी के तौर पर जीवन यापन ही कारावास कहलाता है। फेयर चाइल्ड के अनुसार कारागार एक दण्डात्मक संस्था है। ऐसी परिस्थितियों में संगीत अपना क्या योगदान दे सकता है? अपराधियों की मानसिकता पर संगीत क्या प्रभाव डालेगा? या संगीत के संपर्क में आये कैदियों में किस प्रकार का परिवर्तन देखने को मिलेगा ये जानने का प्रयास इस अध्ययन की मुख्य धारा है।

बीज शब्द: संगीत, अपराध शास्त्र, कारागार, जेल, सुधारात्मक सेवायें, कैदी, पुनर्वास।

### प्रस्तावना

संगीत और अपराध शास्त्र का पुराना संबंध है रत्नाकर डाकू या वाल्मीकि मुनि तथा श्री कृष्ण जैसे अद्वितीय पुरुषों का कारागार एवं अपराध शास्त्र से सीधा संबंध रहा है। वाल्मीकि मुनि ने ही श्री राम के पुत्र लव व कुश को वाण विद्या तथा संगीत की शिक्षा दी थी। जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में मिलता है। श्री कृष्ण अद्वितीय बासुरी वादक थे। उनका जन्म भी कारागार में हुआ था तथा आज भी कारागारों में जन्माष्टमी पर संगीत का कार्यक्रम रखा जाता है। उपरोक्त विचारों के आधार पर राज्यों के कारागारों में कैदियों के पुनर्वास तथा सुधारात्मक कार्यों को बढ़ावा देते हुए, कारागारों में संगीत सिखाने की व्यवस्था थी। 1950 में संविधान लागू हुआ था। ब्रिटिश कारागार व्यवस्था से ही भारतीय कारागार प्रणाली लागू की गई, नई जेलों का निर्माण हुआ और संगीत शिक्षक या संगीत व्यवस्था कैदियों के लिये कितनी महत्वपूर्ण रही इस बात का अध्ययन किया, ये सभी बातें अध्ययन में जानने का प्रयास किया। आज दुनिया भर में संगीत को लेकर नये शोध किये जा रहे हैं। संगीत को लेकर प्रयोग किये जा रहे हैं। साथ ही ध्वनि विज्ञान के क्षेत्र में नित नये शोध हो रहे हैं। इसलिए वर्तमान कारागारों में कैदियों के पुनर्वास हेतु उनकी मनःस्थिति पर संगीत की प्रभावशीलता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

### उद्देश्य

संगीत कारागारों में किस प्रकार अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। इस अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान कारागार प्रणाली के क्रियात्मक पक्ष को सामाजिक पृथक्करण, प्रतिरोध, सुरक्षा, सुधार और सकारात्मक परिवर्तन को लेकर कारागारों में अपराधी की सुधारात्मक तथा उपचारात्मक चिकित्सा के साथ ही इन दण्डबंदियों को सामंजस्य के साथ

समाज में रहने योग्य बनाना, इस तरह संगीत के माध्यम से कैदियों की मनःस्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य सकारात्मक परिवर्तनों को परिणामतः कारागार की प्रभावशीलता की समीक्षा करना है।

### प्रक्रिया

#### कारागार में सर्वेक्षण

मध्यप्रदेश के कारागारों से संबंधित जानकारी एवं जेल मेन्युअल का अध्ययन तथा कारागारों में जाकर स्वयं जानकारी एकत्रित करते हुए जेलों में संगीत प्रथा है अथवा नहीं? यदि है तो किन जेलों में वर्तमान में संगीत शिक्षा दी जा रही है या संगीत से जुड़े कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। यह जानकारी प्राप्त की। भारत के प्रत्येक कारागार में प्रातःकालीन प्रार्थना का प्रावधान है कारागारों में एक प्रार्थना नियमित रूप से कैदियों द्वारा की जाती है- फिल्म दो आंखें बारह हाथ, संगीतकार- बी. शान्तराम, गीत के बोल हैं- ऐ मालिक तेरे बंदे हम, यह प्रार्थना हिन्दुस्तान के प्रत्येक जेल में कैदियों द्वारा गायी जाती है, कारागारों में कितने कैदियों को संगीत सिखाया जा रहा है। सीखकर और सीखते हुए उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ अथवा नहीं इन बातों का अध्ययन किया गया संगीत का क्या प्रभाव कैदियों पर पड़ा, यह जानकारी संगीत के प्रयोगों द्वारा प्राप्त की। मध्यप्रदेश के बहुत से कारागारों में संगीत शिक्षा की व्यवस्था है जिसमें केन्द्रीय जेल भोपाल केन्द्रीय जेल रीवा, जेल वाणी नरसिंहपुर जेल, भैरोगढ़ जेल, उज्जैन आदि में संगीत की शिक्षा व्यवस्था है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के अलग अलग जेलों में संगीत बैंड या जेल बैंड तैयार किये गये हैं। जो कारागारों में आयोजित विभिन्न समारोहों में गीत संगीत का प्रदर्शन करते हैं। जेलों में गीत-संगीत, बंदी सुधार से जुड़ी जानकारीयों और मनोरंजन हेतु एफ.एम रेडियों की भी शुरुआत की गई है ताकि संगीत सुनकर कैदियों में उदासीनता का भाव समाप्त हो तथा उनमें नई उमंग का संचार हो सके, संगीत मानवीय भावों की तथा जीवन के अलग-अलग रसों की लयात्मक और तालबद्ध अभिव्यक्ति है। इसलिए मानव जीवन में संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यूं तो संगीत इस सृष्टि में पहले से ही विद्यमान है और प्रकृति के लयबद्ध नियमन में इसका प्रमाण हम देख सकते हैं।

#### मानव शरीर और स्वरों में संबंध एवं प्रभाव

सात स्वरों का मानव शरीर पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। ध्वनि का संबंध नाद से और नाद ब्रह्माण्ड का स्वर है। इसलिए स्वर को नादब्रह्म कहा गया है। तालिका में धातु, स्वर एवं श्रुतियों के साथ अंग को प्रभावित करने वाले स्थान को दर्शाया गया है।

धातु	स्वर	स्वरों की प्रभावी श्रुतियाँ	प्रभावी स्थान
बीजक	षड्ज (सा)	04	ब्रह्म ग्रंथि
मज्जा	ऋषभ (रे)	03	नाभि
अस्थि	गांधार (गा)	02	हृदय
वसा	मध्यम (मा)	04	कण्ठ
मांस	पंचम (पा)	04	तालू
रूधिर	धैवत (धा)	03	मस्तिष्क
त्वचा	निषाद (नि)	02	त्वचा

इस तालिका के अनुसार स्वरों का मानव शरीर पर सीधा-सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक स्वर मानव के भिन्न-भिन्न अंगों को प्रभावित करता है।

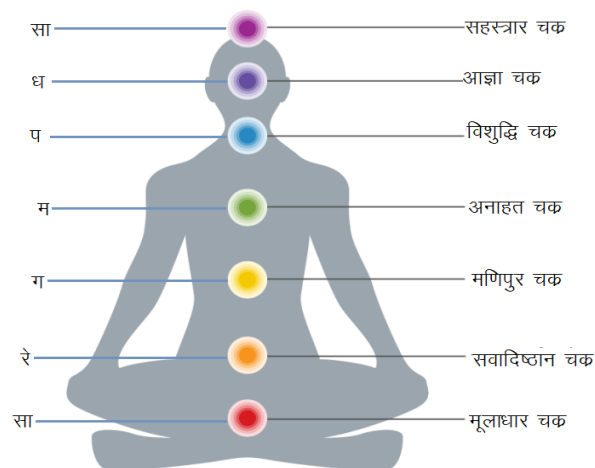
संगीत इतना प्रभावी है कि मानव के कुण्डलीनी को जाग्रत करने में सक्षम है। अतः मानव के शरीर पर कुण्डलीनी अनुसार सात चक्र विद्यमान होते हैं। इन सात चक्रों पर सात स्वरों का अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। जिससे मनुष्य विकृति से आध्यात्म की ओर बढ़ता है। यही कारण है कि कारागारों में यदि कैदियों को अच्छा संगीत सुनाया जाये तो जेल प्रशासन भविष्य में होने वाले बंदियों के पुनर्वास हेतु सजग कदम उठा सकता है। इसलिए संगीत को प्रभावी पक्ष माना गया है। जो मनुष्य के अपराधिक प्रवृत्ति को सकारात्मकता में परिवर्तित कर सकता है।

### भाव एवं रस का संबंध

तालिका में भाव एवं रस के आपसी संबंधों को दर्शाया गया है।

स्वर	रस	भाव
सा एवं रे	वीर, रौद्र, अद्भुत (विस्मय)	सहस, क्रोध और आश्चर्य
एवं नि	गकरूप	करुणामय, करुणा
म एवं प	हास्य एवं रति	हास्य, श्रृंगार
ध	हास्य एवं श्रृंगार	हास्य एवं श्रृंगार

मानव शरीर पर स्वरों के रस निष्पत्ति के अनुसार भाव प्रकट किये जा सकते हैं। मनुष्य जिस प्रकृति का संगीत सुनता है उस अनुरूप उसके अंतःकरण में भाव उत्पन्न होते हैं। अतः कारागारों में कैदियों के मनःशान्ति के लिए ऐसा संगीत सुनाया जाता है। जो उनके मस्तिष्क को भावों से प्रेरित करें तथा उनकी मनोदशा शांत हो एवं नियंत्रण में रहे। अतः बंदियों के हित में संगीत सुनाना एवं बंदीग्रहों में संगीत शिक्षा एवं संगीत के कार्यक्रमों के माध्यम से बंदियों के सुधारात्मक दृष्टिकोण से संगीत एक सकारात्मक माध्यम है। यह मानव के मूल चक्रों को सजग करता है।



चित्र 1. में स्वर और चक्र के मध्य संबंध बताया गया है।

### कारागारों में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग

संगीत अपराधियों के सुधार में एक सशक्त माध्यम की तरह कार्य करता है। यह जानने के लिए कारागार में कैदियों को शास्त्रीय संगीत सुनाया गया इसमें विभिन्न राग कैदियों को सुनाये गये जिसमें- राग मियां की तोड़ी, भैरव राग, मालकोंस, भैरवी आदि रागों में वाद्यों का वादन सुनाया गया। इसमें प्रमुख वाद्य सितार, मुरली, सरोद आदि वाद्य संगीत सुनाया गया जिसे सुनकर कैदियों में आत्म चिंतन का भाव उत्पन्न हुआ चूंकि शास्त्रीय संगीत की समझ सभी को नहीं होती परन्तु सुरों का प्रभाव सभी पर एक समान पड़ता है। संगीत को सुनकर कुछ कैदियों में आध्यात्म का भाव जाग्रत हुआ जो उत्तेजित व क्रोधी स्वभाव के कैदी है। उनके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला। कुछ कैदियों में संगीत सीखने की रूचि जागी। कुछ कैदी भावुक हो गये और कुछ बंदियों ने आग्रह किया की वे गाना सीखकर अपना आगे का जीवन रिहाई के बाद पुनर्वास के लिए संगीत को अपना कर कार्य करेंगे।

मानव शरीर पर संगीत द्वारा पड़ने वाले प्रभाव को रागों के माध्यम से दर्शाया गया है साथ ही मनुष्य के शरीर पर रागों के प्रभाव से उत्पन्न भाव को बताया गया है। कारागार में कैदियों पर प्रयोग में सुनाये गये राग एवं रागों का प्रभाव एवं गायन समय निम्न प्रकार है:-

तालिका में रागों का नाम, समय तथा रागों से उत्पन्न भावों को दर्शाया गया है।

राग का नाम	गायन या वादन समय	राग का भाव
राग भैरवी	प्रातः काल	शोक
राग भैरव	भोर	श्रद्धा
राग काफी	दोपहर	ओजपूर्ण
राग तोड़ी	संध्या काल	आराधना
राग कल्याण	संध्या काल	आमोद
राग पूर्वी	दिन का चैथा प्रहर	वियोग या विरह
राग मारवा	संध्या काल	ओजपूर्ण
राग मियां की तोड़ी	संध्या काल	आराधना
राग आनंद भैरव	किसी भी प्रहर में	रति या प्रेम

वर्तमान में जेलों के अंदर बंदीकल्याण योजना आरंभ हो चुकी है। अतः विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षण, कौशल विकास के कार्यक्रम, हथकरघा उद्योग, मूर्तिकला, बढ़ाई कार्य, और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रशिक्षण बंदियों के पुनर्वास हेतु जेल प्रशासन द्वारा संचालित है। परंतु कारागार सुधारात्मक सेवाएँ एवं पुनर्वास हेतु आगे और भी नये प्रशिक्षण एवं कार्यक्रम प्रारंभ किये गये।

एक सुधारात्मक और पुनर्वासात्मक हस्ताक्षेप के रूप में संगीत कारागारों के लिए एक प्रभावी प्रयास है। इसमें अपराधियों हेतु एक प्रकार का व्यवस्थित सत्र संचालित किया जाता है। जिसमें बंदियों को अलग-अलग प्रकृति का संगीत सुनाकर उनके मनःस्थिति का अध्ययन किया जाता है। जिसमें देशभक्ति गीत भजन, वाद्य संगीत, भारतीय शास्त्री संगीत तथा रागों को सुनाकर उसके प्रभाव का अध्ययन किया गया। जिसमें कैदियों की मनोदशा पर पड़ने वाले प्रभावों को और उनके व्यवहार की प्रकृति में आये सकारात्मक परिवर्तन का अध्ययन किया गया।

बहुत से कैदी ऐसे हैं जो शास्त्रीय संगीत को नहीं समझते, रागों में जो स्वर प्रयोग किये जा रहे हैं परंतु उस राग पर आधारित धुनें पसंद आती हैं। कारागारों में अधिकतर कैदी स्थानीय क्षेत्र के होते हैं और उन्हें स्थानीय लोक संगीत बहुत पसंद आता है। इस प्रकार जो गाना जानते हैं वे कैदी जेल में भजन कीर्तन तथा लोकगीतों के माध्यम से स्वयं को प्रसन्न रखता है। कैदियों को अलग-अलग समय पर भिन्न-भिन्न प्रकार का संगीत सुनाया गया। जिसमें वाद्य संगीत भी शामिल था। सबसे अधिक जो संगीत कैदियों को पसंद आया वह वाद्य संगीत था। जिसमें सितार, सरोद, मुरली और संतूर वाद्यों की रागों पर आधारित धुनें बंदियों को क्रमशः सुनाई गयीं। इस दौरान कैदियों की मनःस्थिति का अध्ययन किया। जिसमें निम्न बातें सामने आयीं।

1. संगीत सुनते हुए कुछ कैदी आखें बंद करके संगीत का आनंद ले रहे हैं।
2. कुछ कैदियों के चेहरे पर पश्चाताप के भाव संप्रेषित हो रहे थे।
3. कुछ कैदी गहन चिंतन में खोये हुए थे।
4. कुछ कैदी संगीत को समझने की कोशिश कर रहे थे। जब उनसे यह पूछा गया कि वाद्य संगीत सुनकर उनके मन में कैसे भाव उत्पन्न हुये। तब उन्होंने बताया कि ऐसा लगता है कि संगीत सुनते रहे और अलग-अलग प्रकृति का संगीत हमें सुनने को प्राप्त हो। क्योंकि शास्त्रीय संगीत की समझ सभी को नहीं होती।
5. कुछ बंदियों को देखकर ऐसा लगा कि वे भावुक हो गये हैं।

### संगीत के प्रयोग द्वारा विभिन्न कैदियों पर पड़ने वाला प्रभाव

तालिका में संगीत के प्रयोग से कैदियों पर होने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है।

राग का प्रयोग	कैदियों की संख्या	परिणाम
राग-पुरिया धनाश्री	37 कैदी	सकारात्मक
राग-भैरव	37 कैदी	सकारात्मक
राग-मिया की तोड़ी	18 कैदी	सकारात्मक
राग-भैरवी	संपूर्ण कैदी	सकारात्मक
राग-जय-जयबंती	15 कैदी	सकारात्मक
राग-शिवरंजनी	संपूर्ण कैदी	सकारात्मक
राग-पूर्वी	संपूर्ण कैदी	सकारात्मक

वर्तमान के कारागारों में कैदियों के सुधारात्मक कार्यों एवं पुनर्वास हेतु विभिन्न प्रकार की योजनाएं एवं प्रशिक्षण संचालित है। जिसमें-

1. व्यवसायिक प्रशिक्षण
2. हथकरघा प्रशिक्षण
3. हस्तशिल्प कला प्रशिक्षण

4. कम्प्यूटर शिक्षा
5. फेब्रीकेशन प्रशिक्षण
6. बर्दई, लकड़ी का कार्य करने का प्रशिक्षण

ये सभी प्रशिक्षण कैदियों के पुनरूत्थान के लिए कारागारों में संचालित है। जिसमें कैदी अपने रिहाई के बाद समाज में स्वयं को पुनस्थापित कर सकें। इसी क्रम में संगीत शिक्षा बंदियों को दिये जाने से उनके जीवन में उत्साह और उमंग का संचार होगा।

### कारागारों में कैदियों के लिये मनोरंजन आदि की व्यवस्थाएं एवं गतिविधियाँ

मध्यप्रदेश के कारागारों की स्थिति अनुसार जेल प्रशासन कैदियों के मनोरंजन की व्यवस्था करता है जिसमें यह सुनिश्चित किया जाता है कि इन सेवाओं में बंदियों के हित एवं उनके सुधारात्मक कार्यों से संबंधित बातें समाहित हैं। मध्यप्रदेश के प्रत्येक कारागार में कैदियों के मनोरंजन हेतु संगीत मण्डलियाँ या बैंड तैयार किये जाते हैं। एक बड़ी स्क्रीन का टी.वी. भी कारागारों में उपस्थित होता है। ताकि समय-समय पर जानकारी पूर्ण कार्यक्रम कैदियों तक पहुँचाये एवं दिखाये जायें। मध्यप्रदेश के समस्त केन्द्रीय कारागारों में संगीतमय कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। जिसमें कैदियों द्वारा तैयार गीतों तथा संस्कृतिक कार्यक्रमों की उत्कृष्ट प्रस्तुति दी जाती है। समस्त त्यौहारों एवं राष्ट्रीय पर्वों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें प्रमुख हैं:- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, होली, दीपावली, श्रीगणेश उत्सव, नवरात्रि महोत्सव, राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि पर्वों पर बंदियों के मनोरंजन का विशेष ध्यान रखा जाता है। इन आयोजनों में सभी बंदी कार्यक्रम का भरपूर आनंद लेते हैं। नृत्यों एवं गीतों के माध्यम से सभी मिलकर कार्यक्रम को सफल बनाते हैं। वर्तमान में कारागारों की संगीतमय आयोजनों की भी व्यवस्था है। जिसमें संगीतमय रामकथा, भगवतगीता, भजन संध्या, एवं जेल बैंड द्वारा फिल्मी गीतों तथा देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति विशेष रूप से दी जाती है। वर्तमान में केन्द्रीय जेल नरसिंहपुर में कैदियों के मनोरंजन को देखते हुए जेलवाणी कार्यक्रम को शुरू किया गया है। जिसमें कैदी ही कार्यक्रम को संचालित करते हैं और कैदी ही अपनी फरमाइशों के अनुरूप गीत सुन सकते हैं। जेलवाणी के माध्यम से सभी कैदियों के कल्याण से संबंधित जानकारियाँ एवं योजनाओं से अवगत कराया जाता है। अध्यात्मिक कथाओं और कहानियों के माध्यम से उन्हें सामाजिक परिवेश में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। कारागारों में जेलवाणी एक ऐसा माध्यम है जिसके आरंभ होने से कैदियों की मनःस्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखे गये हैं और उस अध्ययन में कैदियों के जीवन जीने की नई उम्मीद को भी देखा गया है। कारागार प्रशासन का ये दायित्व होता है कि बंदियों को किसी भी प्रकार की क्षति न पहुँचे ताकि उनमें किसी भी प्रकार की विकृति पुनः स्थापित न हो पायें। इसलिए प्रत्येक कारागारों में बंदियों के मनोरंजन की उचित व्यवस्थाएं और मनोरंजन से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। केन्द्रीय कारागार रीवा, जबलपुर, भोपाल, नरसिंहपुर, ग्वालियर में कैदियों के लिये संगीत सीखने की व्यवस्था अलग से रखी गई है। जिसमें



बाहर से विशेषज्ञ के द्वारा समय-समय पर संगीत कक्षाओं का सत्र संचालित किया जाता है। विभिन्न जेलों में संगीत को पाठ्यक्रम के अनुरूप ही सिखाया जाता है।

### निष्कर्ष

कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता परिस्थिति तथा समय काल उसे अपराध करने पर विवश करता है। अतः संगीत के संपर्क में आने पर कैदियों में एक नये उत्साह का संचार होगा क्योंकि संगीत शान्ति के साथ-साथ अनुशासन भी सीखाता है। किसी व्यक्ति द्वारा अपराध होने का मुख्य कारण है परिवेश और परिस्थितियाँ हैं। ये उसे ऐसा करने पर मजबूर कर देती हैं। अतः वे अपराधी बन जाते हैं। वे अपने किये का पश्चाताप भी करना चाहते हैं। कुछ व्यक्तियों से गलती से कोई अपराध हो जाता है और कुछ न चाहते हुए भी ऐसा कर बैठते हैं। कुछ कहते हैं कि मुझे गलत फसाया गया है। परन्तु सत्य यह है कि कोई भी अपराध रूपी दलदल में नहीं फसना चाहता इसलिए ये व्यक्ति संगीत की ओर बढ़ते हैं। संगीत कभी भी इन्हें अकेला नहीं रहने देता। संगीत उन्हें मानसिक सांत्वना प्रदान करता है यही मुख्य कारण है कि कारगारों में संगीत एक सुधारात्मक प्रयास के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए जेल प्रशासन द्वारा वर्तमान में संगीत की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है और सुधारात्मक कार्यों में तथा अन्य प्रशिक्षणों के साथ संगीत को भी लगभग सभी जेलों में सिखाया जाये एवं प्रयोग में लाया जाए तो न केवल कैदियों के लिए फायदेमंद साबित होगा बल्कि यह पूरी प्रणाली को अनुशासित कर देगा।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विलायत हुसैन खान, संगीतज्ञों के संस्मरण, संगीत नाट्य अकादमी, नई दिल्ली, 1959
2. D.J. Champion, Research Method for Criminal Justice and Criminology, Prentice- Hall, Englewood Cliffs, 1993
3. भगवत शरणशर्मा, भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत कार्यालय हाथरस, 2010
4. आर. एस. विजयवर्गीय, जेल नियमावली, वाधवा ला हाउस, 2015.
5. D. Clemmer, The Prison Community, Holt, Rinehart and Winston, New York, 1958
6. लक्ष्मीनारायणगर्ग, आवाज सुरीली कैसे करें, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1979.
7. टी.व्ही. सुब्बाराव, स्टडीज इन इंडियन म्यूजिक, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1965
8. डॉ. अनुपम महाजन, भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौंदर्यशास्त्र, परनानी प्रिंटिंग प्रेस, पंचकूला, 1993.
9. राजा सौरिन्द्र मोहनठाकुर, युनिवर्सल हिस्ट्री आफ म्यूजिक, रि-प्रिंट, मिततल पब्लिकेशन, 1986
10. ओमप्रकाश भारती, लोकायन (लोक कला रूपों पर एकाग्र) धरोहर कला संस्कृति साहित्य संस्थान, 251 सत्यम एनक्लेव, जी.टी. रोड, साहिबाबाद, उत्तर प्रदेश, 2007.
11. रवीन्द्र नाथठाकुर, संगीत चिंता, विश्व भारती बंगला संवत् 1392
12. पं. रविशंकर, माय म्यूजिक, माय लाइफ, मण्डला पब्लिकेशन, 2007
13. Report of the All Indian Committee on Jail Reforms, 1980-1983, (Chairman-A.N.Mulla) Vols. I and II, Government of India Press, Minto Road, New Delhi.
14. ओ.पी.श्रीवास्तव, आपराधिक विधि के सिद्धान्त इस्टर्न बुक कम्पनी, लखनउ, 2012
15. बसन्ती लाला बाबेल, अपराधशास्त्र एवं दण्डशास्त्र, इस्टर्न बुक कम्पनी, चतुर्थ संस्करण, 2012